भजन

तर्ज–सत्यम् शिवम् सुन्दरम

सच्चिदानन्द है,वो ही पिऊ है, पिऊ ही अपना है
रूहों उठकर देखो, निज आनन्द ही अपना है

आनन्द अपना अखण्ड

1–एक सरूप है लीला दोए, आनन्द है निजघर में
सतअंग की लीला सत्ता की, जो है अक्षर ब्रह्म
अक्षर पार है हम

2–नूर सरूप है युगल पिया जी,अंग श्यामा जी रूहें नूर
नूर समाया है कण कण में, नूर चांद और सूर
नूरी है अपना वतन

3–इश्क सरूप है वो पिया जी, दिल तो श्यामा जी है
श्यामा जी से आनन्द रूहों का,लीला ये वाहेदत की है
धाम धनी के है तन